दादा भगवान परिवार का

अक्टूबर २०२०

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

चीटिंग

संपादकीय

बालमित्रों,

चीटिंग करने में क्या हर्ज़ है? जीतने के लिए थोड़ी चीटिंग तो करनी ही पड़ती है न! क्या यह बात सही है?

क्या जो चीटिंग करके जीतता है उसे सच्चा चैम्पियन कहा जाएगा?

अनुजा ने चीटिंग करने की बात स्वीकारी तो उसका क्या परिणाम आया?

ज्ञानी किस पर राज़ी होते होंगे?

इन सभी प्रश्नों का जवाब प्राप्त करने के लिए यह अंक ख़ास तौर पर पढ़ें। और अंत में हम खुद ही तय करें कि चीटिंग करने में फायदा ज़्यादा है या नुक़सान?

-डिम्पल मेहता

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ८ अंक : ६
अखंड क्रमांक : ९१
अक्टूबर २०२०

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला - गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

मीठी यादें

१९९६ में ह्युस्टन, टेक्सास में गुरु-पूर्णिमा थी। गुरु पूर्णिमा के दिन दर्शन करने के बाद मैंने नीरू माँ से कहा, "नीरू माँ, घर में मम्मी का नियम है कि दिन में सिर्फ दो बिस्किट खाने चाहिए, ज्यादा नहीं। लेकिन मुझे मीठा खाना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मम्मी जब किचन में नहीं होती है तब मैं एक-दो बिस्किट ज्यादा खा लेती हूँ। मुझे पता है कि मैं जो करती हूँ उसे कपट कहा जाता है। मुझे इसमें से बाहर निकलना है।"

मैंने नीरू माँ से इतनी बात की और उनका चेहरा एकदम चमक उठा। शी वॉज वेरी हैपी! उन्होंने मुझे एक बड़ी स्माइल दी और प्यार से गले लगाया। नीरू माँ का ऐसा रिएक्शन देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने तो कपट किया था, फिर भी नीरू माँ खुश हुई।

आज मुझे समझ में आया कि नीरू माँ ने मुझे गले क्यों लगाया! जब हम अपनी भूलों में से निकलने की तैयारी बताते हैं तब नीरू माँ हमेशा खुश ही होते हैं।

दादाजी कहते हैं...

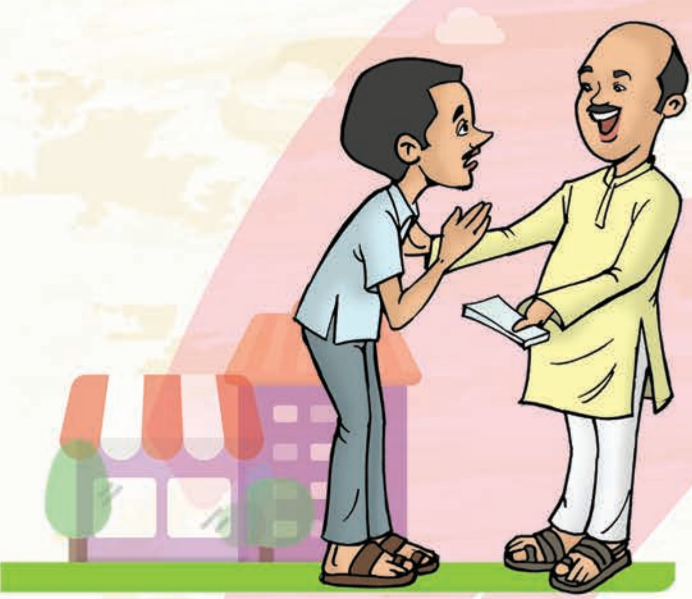

मैं खेल में सभी के साथ चीटिंग क्यों करता हूँ?

- जीत की लालच चीटिंग करवाती है।
- लालच सामने वाले का विश्वास तुड़वा देती है।

विश्वास तोड़ना अर्थात क्या?

- उदाहरण के तौर पर किसी ने हमें २५००० रुपए दिए हों और हमें रुपए वापस लौटाने हों।
- फिर लालच आ जाती है कि वह तो करोड़पति है, उसे नहीं लौटाएँगे तो क्या फर्क पड़ेगा?
- यह हमने उसका विश्वास तोड़ा कहा जाएगा।

सामने वाला का विश्वास तोड़ने से क्या होगा?

- एक बार तोड़ते हैं, दूसरी बार तोड़ते हैं, फिर तीसरी बार पैसे लेने जाएँगे तो वह नहीं देगा। कहेगा, जाने दो न, ये तो झूठे हैं।
- पैसों की लालच भान भुला देती है।
- ऐसे ही, जीतने की लालच मन में पैदा होती है तो ऐसा लगता है कि बस इतनी चीटिंग कर लूँ। किसी को पता नहीं चलेगा।
- यानी कि विश्वासघात करते हैं।
- अब उस व्यक्ति के लिए हमारी कीमत खत्म हो जाती है, कि दूसरी बार इसके साथ नहीं खेलना चाहिए। ये भरोसे के लायक व्यक्ति नहीं है।

चीटिंग के प्रतिक्रमण किस तरह करना है?

- जब पता चले तब माँफी माँग लेनी चाहिए कि 'मैं माँफी माँगता हूँ। अब कभी घोटाला नहीं करूँगा।'
- यदि घोटाला नहीं करेंगे तो वापस विश्वास गेन होता जाएगा। ''
- यदि तुम खेल के नियम का पालन करोगे तो भरोसा बना रहेगा। सामने वाला अगली बार तुम्हारे साथ ज़रूर खेलेगा।

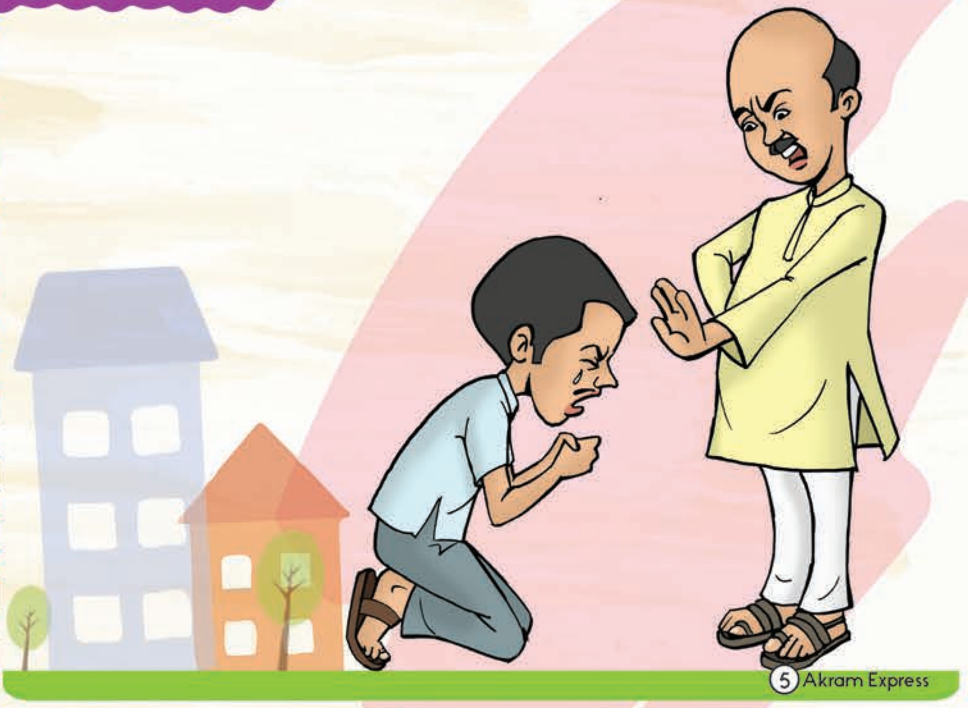

यह तो नई ही बात है!

01

अपना मोह पूरा करने के लिए फ्रैन्ड के साथ विश्वासघात करते हैं। उसका दंड फ्रैन्ड नहीं देगा, कुदरत ही देगी।

02

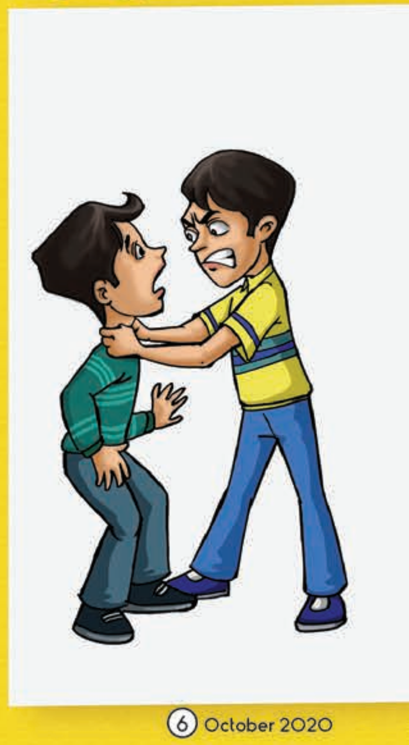

2

विश्वासघात करते हैं तो इंसान की कीमत ज़ीरो हो जाती है। ज़ीरो यानी उस पर से विश्वास उठ जाता है।

03

जगत् हमारी ही प्रतिध्वनि है। हमारा किया हमें ही वापस मिलता है। यदि आज अगर मैं किसी की निंदा करूँ तो मैं खुद ही निंदनीय हो जाऊँगा। यदि मैं किसी को परेशान करूँगा तो मुझे परेशानी झेलनी पड़ेगी। यदि मैं किसी के साथ धोखा करूँगा तो कभी न कभी मेरे साथ भी धोखा होगा। मैं किसी के घर से पैसे चुराऊँगा तो मेरे घर से भी पैसों की चोरी होगी। ज़रा भी गलती करने पर रिऐक्शन में कुदरत से दंड मिल ही जाता है। किसी को हमें देने की उसकी ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

A+ ग्रेड

पूरे हॉल में सन्नाटा छाया हुआ था। सिर्फ घड़ी की टिक-टोक, टिक-टोक सुनाई दे रही थी। सभी की नज़रे मंच पर बैठी हुई अनुजा पर थी। चालीस सेकंड की देर थी। अनुजा की धड़कन इतनी बढ़ गई कि उसे ऐसा लगा कि मानो उसका दिल उछलकर अभी बाहर आ जाएगा।

"टाइम-अप" जज ने कहा और अनुजा की आँखों में से आँसू बहने लगे।

पूरे हॉल में कोलाहल मच गया। "साइन्स में 'A+ ग्रेड' लाने वाली अनुजा को इतना ईज़ी आन्सर नहीं आया! व्हॉट अ शेम! इस लड़की ने तो हमारे स्कूल की नाक कटवा दी।" अनुजा मंच से नीचे उतरी और उसे खुसुर-फुसुर सुनाई दी, "ऐसी प्रेस्टीजियस कॉम्पीटिशन में अनुजा को सलेक्ट ही नहीं करना चाहिए था।"

अनुजा बहुत शर्मिंदा हुई। "मैंने ऐसा क्यों किया? क्यों? क्यों? क्यों?" प्लीज़ मुझे अदृश्य कर दो।

अनुजा के ये शब्द निकले, तभी उसके भाई ने ज़ोर से कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा सपना सच हो जाए।"

अनुजा चौंक कर जाग गई। घड़ी में देखा तो सात बज गए थे। उसने एक गहरी साँस ली और धीरे से बड़बड़ाई, "थैंक गॉड कि यह सपना था।"

वह फटाफट स्कूल जाने के लिए तैयार हो गई। लेकिन हर रोज़ की तरह क्लासरूम में दाखि़ल होते समय उसका मन बोझिल हो गया।

बात ऐसी थी कि दस दिन पहले साइन्स का टेस्ट था। टेस्ट के पहले दिन अनुजा को बहुत घबराहट हुई। पढ़ने के बजाय डर में उसका समय बीत गया। अंत में उसने तय किया कि थोड़ी 'हेल्प' लेकर टेस्ट में अच्छे मार्क्स ले आऊँ। उसने अपने चश्मे के कवर में थोड़े फार्मूला लिख लिए थे। टेस्ट के समय चश्मा लेने या

रखने के बहाने कवर खोलकर वह फार्मूला देख लेती थी।

टेस्ट में तो अनुजा को 'A+ ग्रेड' आ गया लेकिन एक चीटर बनकर अच्छे मार्क्स लाने का गिल्ट उसके मन में बैठ गया।

"अच्छे मार्क्स के लालच में मैंने यह क्या कर डाला।" उसे अपने किए पर भयंकर अफ़सोस हुआ।

यही कारण था कि क्लासरूम में पैर रखते ही उसे झिझक महसूस होती थी। हर तीसरे दिन उसे कुछ ऐसा सपना आता था जिसमें सभी का उस पर से विश्वास उठ गया होता है। पढ़ने में भी उसकी एकाग्रता टूट गई थी।

अंत में एक दिन अनुजा ने हिम्मत इकट्ठी की। स्कूल के बाद वह साइन्स टीचर निर्मला मैडम से मिलने स्टाफ रूम में गई। मैडम के सामने उसने अपनी चीटिंग को स्वीकार किया। अनुजा को लग रहा था कि मैडम बहुत गुस्सा होगी लेकिन मैडम ने शांति से अनुजा की बात सुनी और दस पोइन्ट की पेनल्टी के साथ फिर से टेस्ट देने के लिए कहा।

अनुजा के मन का भार हल्का हो गया। एक 'चीटर' होने का अहसास तो उसके मन से मिटा नहीं था। लेकिन इस बात की खुशी थी कि उसने अपनी भूल स्वीकार कर ली।

दिन बीतने लगे। फिर से एक बड़ा टेस्ट होने वाला था। अनुजा ने बहुत मन लगाकर टेस्ट के लिए मेहनत की। इस बार अपनी मेहनत से उसे 'A+ ग्रेड' लाना था, चीटिंग करके नहीं।

टेस्ट का दिन था। सभी को टेस्ट पेपर्स दिए गए। टेस्ट पेपर के कठिन सवाल देखकर अनुजा को थोड़ा डर लगा। एक छोटी सी प्रेयर करके वह जवाब लिखने लगी।

अचानक उसे निर्मला मैडम की आवाज़ सुनाई दी।

"अनुजा"

एक पल के लिए उसके हृदय की धड़कन रुक गई। उसने सिर उठाकर देखा। मैडम ने इशारा करके उसे अपने पास बुलाया। अनुजा शर्म से लाल हो गई। उसे लगा, "मेरे जैसी चीटर इसी लायक है!"

"अनुजा," मैडम ने कहा, अनुजा को लगा कि मैडम उसे फिर चीटिंग नहीं करने के लिए कहेगी या तो फिर अपने पास बिठाकर लिखने के लिए कहेगी।

मैडम ने कहा, "मैं अपनी साइन्स की टेक्स्ट बुक स्टाफ रूम में भूल आई हूँ। अभी तो मैं क्लास से बाहर नहीं निकल सकती। तू फटाफट ले आएगी?" मैं तुझे टेस्ट फिनिश करने के लिए थोड़ा एक्स्ट्रा टाइम दूँगी।

अनुजा को अपने कान पर विश्वास नहीं हुआ। कुछ क्षणों के लिए सारे प्रश्न उसके मन में उठने लगे। "टेक्स्ट बुक लेकर आऊँ? मैं? क्या मैडम को पता नहीं है कि टेस्ट के सभी आन्सर्स बुक में होंगे?"

"मैडम, आर यू श्योर, बुक मैं लेकर आऊँ?" अनुजा ने मैडम से पूछा।

"हाँ, बेटा। खास तुम ही लेकर आओ। जिस पर मैं ट्रस्ट कर सकूँ, उसे ही तो यह काम सौंपूँगी ना! " मैडम ने कहा।

"बट मैडम," अनुजा धीरे से बोली, "आपको याद नहीं कि मैंने... "

मानो मैडम ने अनुजा के विचार पढ़ लिए हों वैसे धीरे से स्माइल के साथ कहा, "मुझे सब याद है। ख़ास तो यह बात याद है कि तुझे अपनी भूल का कितना अफ़सोस हुआ था। और यह भी याद है कि कितनी हिम्मत से तुमने अपनी भूल स्वीकार कर ली थी। और इसलिए ही मुझे विश्वास है कि अब तुम फिर से चीटिंग कभी नहीं करोगी।"

"थैंक यु मैडम। आपका विश्वास कभी नहीं टूटने दूँगी। अभी बुक लेकर आती हूँ", कहकर अनुजा स्टाफ रूम की ओर दौड़ी।

मैडम को बुक देकर अनुजा जब अपनी जगह पर वापस लौटी तब उसे कुछ अलग तरह का हल्कापन महसूस हो रहा था। टेस्ट के सवाल तो अभी भी कठिन ही थे लेकिन अनुजा का डर गायब हो गया था।

उस दिन टीचर का विश्वास जीतकर उसने साइन्स से भी ज़्यादा कठिन टेस्ट 'A+ ग्रेड' से पास कर लिया था।

नीचे दी गई कहानी के कुछ सीन इधर-उधर हो गए हैं। तो चलो, सीन को करेक्ट ऑर्डर में सेट करें और कहानी का मज़ा लें।
हिन्ट : करेक्ट ऑर्डर का पहला सीन है, नं : ४

मेरा सही क्रम क्या है?

एक दिन व्यापारी को लगा, "लाओ न, वजन करके देख लूँ। इस किसान ने मुझे पाव किलो मक्खन ठीक से तौलकर दिया है या नही?" व्यापारी ने वजन किया तब पता चला कि मक्खन का वजन पाव किलो से कम है। व्यापारी को गुस्सा आया। वह किसान को गाँव के न्यायाधीश के पास लेकर गया।

न्यायाधीश ने किसान से पूछा,"भाई, तुम वजन करने के लिए कौन से बाट का उपयोग करते हो?" किसान बोला, "साहब, मैं तो बिल्कुल अनाड़ी हूँ। मेरे पास वजन करने का कोई बाट नहीं है। हाँ लेकिन एक तराजू है।"

किसान ने जवाब दिया, "साहब, व्यापारी मेरे पास से पाव किलो मक्खन खरीदता था और मैं व्यापारी से पाव किलो गेहूँ खरीदता था। व्यापारी के पास से पाव किलो गेहूँ खरीदकर लाता और फिर वे गेहूँ अपने तराजू पर रखकर उतना ही मक्खन तौलकर उसे दे देता। बोलो साहब, इसमें मेरी क्या गलती है?"

न्यायाधीश ने किसान से पूछा, "तो फिर तुम मक्खन का वजन किस तरह करते हो?

एक छोटे से गाँव में रहने वाला किसान हमेशा एक व्यापारी को पाव किलो मक्खन बेचता था।

जज ने व्यापारी से कहा, "भाई, जगत हमारी प्रतिध्वनि है। हमारा किया हुआ हमें ही वापस मिलता है। मैं दूसरों से छल करूँगा तो मैं भी किसी दिन छला जाऊँगा। तुमने किसान को छला और अंत में तुम ही छले गए।"

My Creation

मटीरियल न्युज़ पेपर, फेविकोल, लेस, कलरफूल पेपर।

न्यूज़ पेपर को बीच से कट कर लें।

उसे गोल–गोल लपेटते हुए डंडी जैसा बना लो। और अंत में फेविकोल लगाकर चिपका दो। इस तरह दो डंडी बनाना है।

अब न्यूज़ पेपर से बनाए गए डंडियों पर चित्र दर्शाए अनुसार आपको जो कलर पसंद हों उन्हें एक–एक कर चिपका दें।

कलर पेपर वाले डंडियो पर चित्र में दर्शाए अनुसार लेस लगाएँ।

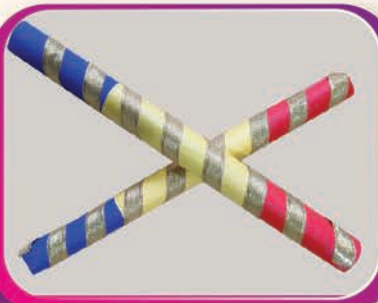

नवरात्रि में गरबा खेलने के लिए आपके द्वारा बनाया हुआ डांडिया तैयार है।

चलो खेलें का जवाब :

1 2. ARE

मेरा सही क्रम का जवाब :

४. १. ३. २. ५. ६

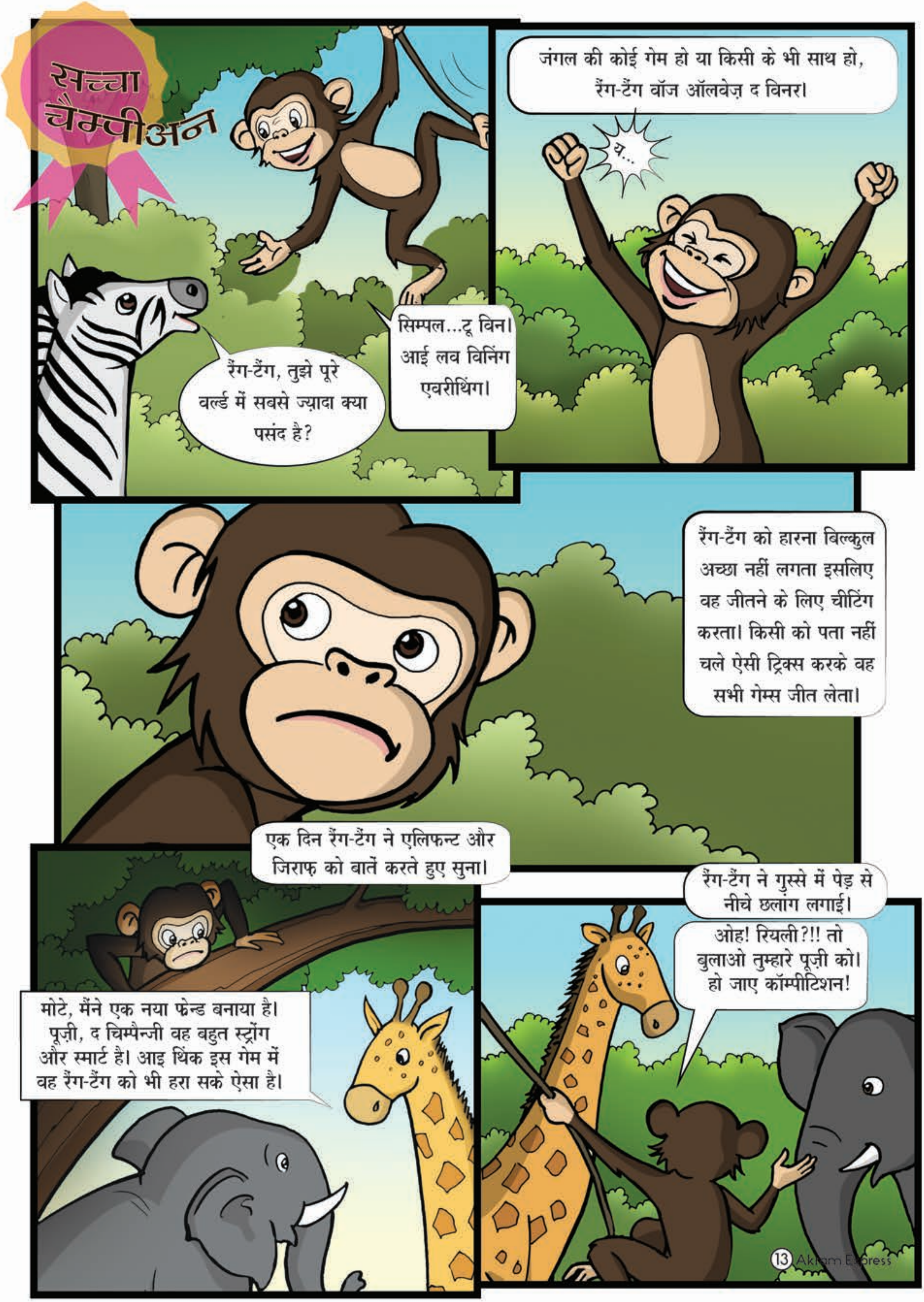
सच्चा चैम्पीअन
रैंग-टैंग, तुझे पूरे वर्ल्ड में सबसे ज़्यादा क्या पसंद है?
सिम्पल...टू विन। आई लव विनिंग एवरीथिंग।
जंगल की कोई गेम हो या किसी के भी साथ हो, रैंग-टैंग वॉज ऑलवेज़ द विनर।
रैंग-टैंग को हारना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता इसलिए वह जीतने के लिए चीटिंग करता। किसी को पता नहीं चले ऐसी ट्रिक्स करके वह सभी गेम्स जीत लेता।
एक दिन रैंग-टैंग ने एलिफन्ट और जिराफ को बातें करते हुए सुना।
मोटे, मैंने एक नया फ्रेन्ड बनाया है। पूज़ी, द चिम्पैन्जी वह बहुत स्ट्रोंग और स्मार्ट है। आइ थिंक इस गेम में वह रैंग-टैंग को भी हरा सके ऐसा है।
रैंग-टैंग ने गुस्से में पेड़ से नीचे छलांग लगाई।
ओह! रियली?!! तो बुलाओ तुम्हारे पूज़ी को। हो जाए कॉम्पीटिशन!

मैंगवेस्ट की कॉम्पीटिशन आयोजित की गई। पाँच मिनट में जो सबसे ज़्यादा मैंगोज तोड़ेगा वह विनर होगा।
कॉम्पीटिशन के दिन पूज़ी एकदम ईज़ी था। सभी के साथ हँसी मज़ाक कर रहा था। और दूसरी ओर रैंग-टैंग ज़बरदस्त सीरियस था।
टीगी टाइगर ने व्हिसल बजाई और कॉम्पीटिशन शुरू हुई। बिल्कुल बराबरी का कॉम्पीटिशन था। रैंग-टैंग और पूज़ी ने लगभग बराबर-बराबर मैंगोज इकट्ठी किए थे।
हर बार की तरह एन्ड टाइम पर रैंग-टैंग ने चीटिंग करके कॉम्पीटिशन जीत लिया।
गुड गेम, रैंग-टैंग! वी विल प्ले अगेन।

रैंग-टैंग सबको हरा देता था। इसलिए जंगल का कोई भी ऐनीमल रैंग-टैंग के साथ खेलने के लिए तैयार नहीं होता था। जबकि पूज़ी ने तो रैंग-टैंग के साथ फिर खेलने की तैयारी दिखाई।
पूज़ी तो हारकर भी कितना हैप्पी दिख रहा है। क्या उसे हारने का दुःख नहीं हुआ होगा? उस दिन पहली बार रैंग-टैंग को अपनी जीत की खुशी नहीं हुई।
और बस, उस दिन से पूज़ी रोज़ रैंग-टैंग के साथ खेलता और रैंग-टैंग रोज़ पूज़ी को नई-नई ट्रिक का उपयोग करके हरा देता।
रैंग-टैंग अब पूज़ी के साथ खेलकर बोर हो गया था। इसलिए उसने द नैशनल जंगल टुर्नामेन्ट में भाग लिया। पूरे देश के जंगल के बेस्ट ऐनीमल्स इस टुर्नामेन्ट में भाग लेने आए थे।
रैंग-टैंग ने चीटिंग ट्रिक्स का उपयोग करके गेम्स जीतने की बहुत कोशिश की। लेकिन जजिज ने रैंग-टैंग की किसी भी ट्रिक को चलने नहीं दिया। वह सभी गेम्स में से आउट हो गया।
रैंग-टैंग अच्छा प्लेयर था लेकिन चीटिंग ट्रिक्स के बिना वह कोई गेम जीत नहीं पाया। रैंग-टैंग के लिए हार का स्वाद बहुत कड़वा था।

जब रैंग-टैंग एकदम निराश होकर बैठ गया था तभी टुर्नामेन्ट चैम्पियन की घोषणा हुई।
एन्ड द विनर ऑफ टुर्नामेन्ट इज़ पूज़ी द चिम्पैन्ज़ी।
पूज़ी ने हाथ में ट्रोफी लेकर रैंग-टैंग को स्माइल दी। हार-जीत से पूज़ी को बहुत फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन, रैंग-टैंग के साथ ही हर एक हार में वह कुछ नया-नया सीखता गया।
और उस समझ से आज वह रियल चैम्पियन बन गया था।
थैंक्स रैंग-टैंग। मुझे तुमसे बहुत कुछ सीखने मिला।
उस दिन रैंग-टैंग को चीटिंग करके जीतने के बजाय हारकर सीखने का महत्व समझ में आया। जब से रैंग-टैंग ने चीटिंग करके सभी को हराना छोड़ दिया। तब से जंगल एनीमल्स उसकी कम्पनी एन्जॉय करने लगे।
रैंग-टैंग, तुझे पूरे वर्ल्ड में सबसे अच्छा क्या लगता है?
सिम्पल... टु विन। सभी के दिल जीतना मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगता है।

चलो खेलें...

१. सभी विद्यार्थियों को एक-दूसरे से अलग करने के लिए स्कूलयार्ड चौकोर लाइन ड्रॉ करो।

२. नीचे दिए गए सभी खाली जगह पर एक अक्षर लिख कर शब्द बनाएँ।

DE _ _ _ ST

C _ _ _ ER

ST _ _ _

P _ _ _ NT

ऐतिहासिक गौरव गाथा

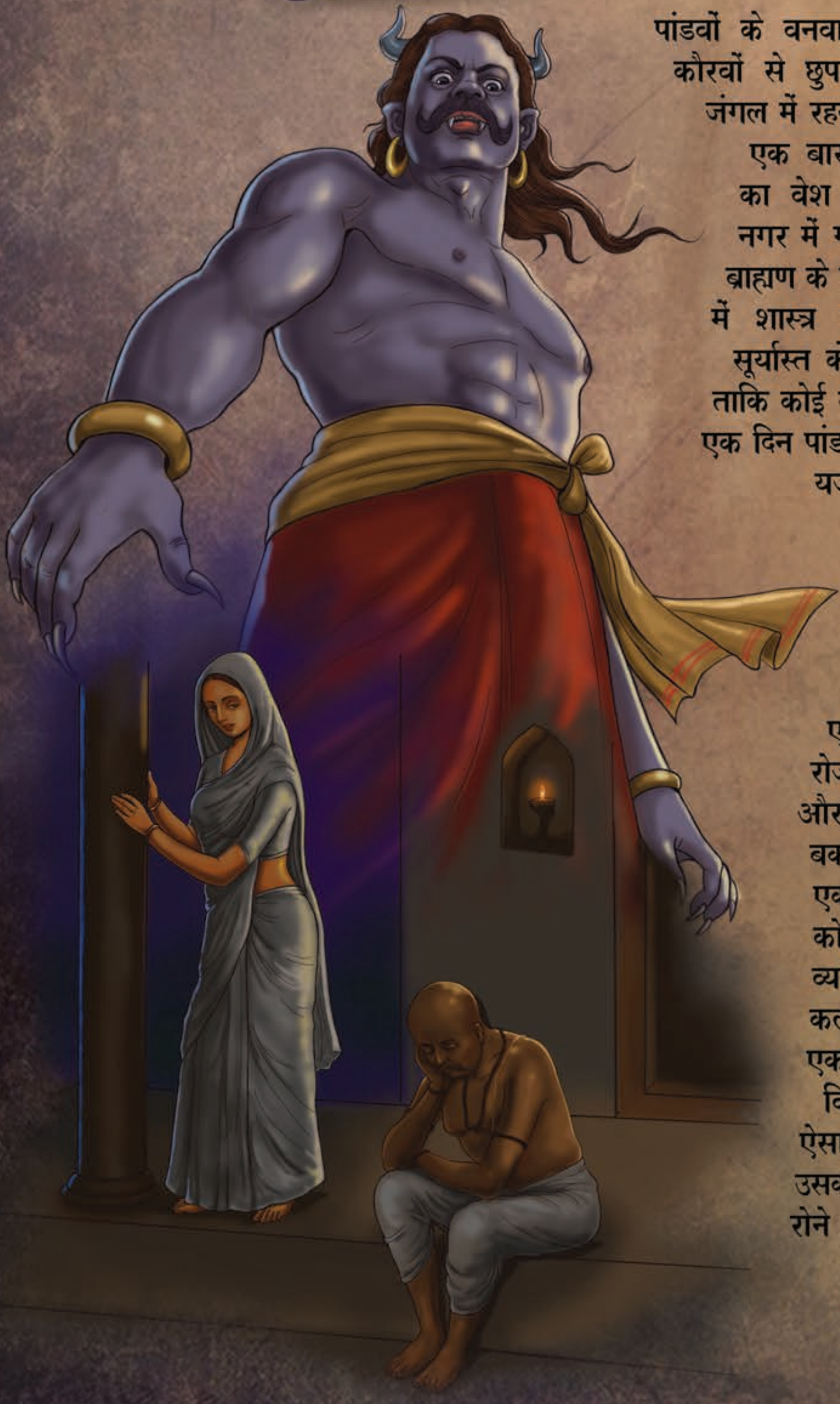

पांडवों के वनवास के समय की बात है। कौरवों से छुपकर उन्हें बारह साल तक जंगल में रहना पड़ा था।''

एक बार वे वेश बदलकर, ब्राह्मण का वेश बनाकर 'एकचक्र' नामक नगर में गए। वहाँ उन्होंने एक गरीब ब्राह्मण के घर में आसरा लिया। वे दिन में शास्त्र का अध्ययन करते और सूर्यास्त के बाद भिक्षा के लिए जाते ताकि कोई उन्हें पहचान न ले।

एक दिन पांडवों की माता कुंती ने अपने यजमानों को रोते हुए देखा। कुंती ने उनसे पूछा, "किस वजह से इतने परेशान हो?"

यजमान ने कहा, "जंगल में बकासुर नामक एक राक्षस रहता है। उसे हर रोज़ एक आदमी, दो भैंसे, और बहुत सारा खाना चाहिए। बकासुर के आहार के लिए एकचक्र के हर एक परिवार को बारी-बारी से एक युवा व्यक्ति को भेजना पड़ता है। कल हमारी बारी है। हमारे एकमात्र बेटे को भेजने का विचार ही हमें हिला देता है।" ऐसा कहकर ब्राह्मण और उसकी पत्नी बिलख-बिलखकर रोने लगे।

कुंती ने उनसे कहा, "आप चिंता मत कीजिए। आपके बेटे के बदले मेरा पुत्र जाएगा।"

यजमान ने कहा, "अतिथि को बकासुर के पास भेजना, यह तो बहुत बड़ा पाप कहा जाएगा। हम ऐसा पाप कैसे करें?"

परंतु कुंती ने उन्हें आश्वासन दिया कि उसका पुत्र तो बहुत ही बलवान है। बकासुर उसका बाल भी बाँका नहीं कर पाएगा। जब भीम को यह पता चला तब वह खुशी से झूम उठा क्योंकि कितने समय से उसने किसी राक्षस के साथ लड़ाई नहीं की थी। साथ ही यह बात जानकर वह अत्यंत खुश हो गया कि उसे बहुत सारा खाना भी मिलने वाला है।

दूसरे दिन भीम एक गाड़ी भरकर खाना लेकर जंगल में गया। वह बहुत भूखा था इसलिए उसने खाना शुरू कर दिया। तरह-तरह के व्यंजन थे। इसलिए भीम तो दोनों हाथों से खाने लगा।

बकासुर सो रहा था लेकिन भोजन की सुंगध से वह जाग गया। उसने देखा कि एक मानव खुशी से उसका सारा खाना खा रहा है। इसलिए वह एकदम क्रोधित हो गया।

उसने चिल्लाकर कहा, "हे मानव! कौन है तू? मैं तुझे खा जाऊँ उससे पहले मेरा खाना मुझे दे दे?"

भीम ने तो उसकी ओर देखा भी नहीं और वह खाता ही रहा। इससे बकासुर को और ज़्यादा गुस्सा आ गया और भीम की तरफ आगे बढ़ा।

भीम ने पेट भरकर खा लिया था इसलिए उसने बकासुर को ज़ोर से एक मुक्का मारा। बकासुर पटकनी खाकर दूर एक पेड़ पर गिरा। वह पेड़ को उखाड़कर भीम की ओर दौड़ा। लेकिन भीम ने सिर्फ एक हाथ से ही उसे रोक दिया और ज़ोर से एक लात मारी। फिर भीम ने पेड़ उखाड़कर उसे ज़ोर से मारा। इस तरह दोनों के बीच जमकर लड़ाई चलती रही। बकासुर ने कभी इतने बलवान व्यक्ति के साथ लड़ाई नहीं की थी इसलिए वह तो एकदम कमजोर पड़ गया। लेकिन भीम बिल्कुल भी नहीं थका था। अंत में भीम ने यह लड़ाई खत्म करने का तय किया। भीम ने खिलौने की तरह बकासुर को हवा में ऊपर उछालते हुए पटक दिया। बकासुर ज़मीन पर गिरा और उसके शरीर की सभी हड्डियाँ टूटकर चूर-चूर हो गईं। और उसकी मृत्यु हो गई। भीम ने ज़ोर से गर्जना की। इसके साथ ही दूसरे सभी राक्षस जंगल छोड़कर भाग गए।

एकचक्र नगर बकासुर के त्रास से मुक्त हो गया। लोगों ने मुक्ति का उत्सव मनाया। भीम सभी का प्रिय बन गया। लोग पांडवों को अपने घर भोजन के लिए निमंत्रित करने लगे।

पांडव तो कौरवों से छिपकर वनवास भोग रहे थे। कौरवों को शंका हो सकती है कि इतने बहादुर ब्राह्मण तो पांडव ही हो सकते हैं इसलिए पांडवों के लिए अब उस गाँव में रहना सुरक्षित नहीं था। इसलिए वे गाँववासियों की आज्ञा लेकर वापस परिभ्रमण करने निकल पड़े।

भीम और बकासुर की यह कहानी हमें फर्ज का बोध देती है। ब्राह्मण परिवार को ख्याल था कि वेश बदलकर पांडव ही आसरा माँगने के लिए आए हैं। परेशानी में होते हुए भी अपना फर्ज समझकर उन्होंने पांडवों को आसरा दिया। पांडव क्षत्रिय योद्धा थे। पहचाने जाने का जोख़िम होने के बावजूद उन्होंने अपने यजमान का और एकचक्र के लोगों का रक्षण किया और अपने फर्ज़ का पालन किया। तो मित्रों, आप भी निष्ठापूर्वक अपने फर्ज़ का पालन करोगे न?

Akram Express

October 2020
Year : 8, Issue : 6
Conti. Issue No.: 91

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

आप लोगों द्वारा बनाए हुए टीचर्स के लिए स्पेशल गिफ्ट की फोटो।

जेवल सोलंकी - जेवीका सोलंकी

पूर्णता कटकीया

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025